SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-3, March- 2024
www.shikshasamvad.com

"भारत में ग्रामीण निर्धनता–एक सामाजिक समस्या"

सुकन्या कुमारी
शोधार्थिनी, शिक्षाशास्त्र
श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय
गजरौला (अमरोहा) उ0प्र0

डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह
शोध पर्यवेक्षक
श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय
गजरौला (अमरोहा) उ0प्र0

भारत में गरीबी या निर्धनता एक विकराल आर्थिक समस्या ही नहीं, अपितु एक भयंकर सामाजिक रोग भी है। सच है कि निर्धनता का स्वरूप आर्थिक है, परन्तु इसके फलस्वरूप जो सामाजिक दुष्परिणाम सामने आते हैं, उनसे सामाजिक सम्बन्धों का तना–बाना बहुत कुछ टूट–सा जाता है। इसी निर्धनता का जो कटु रूप भारत में दिखाई देता है, वैसा शायद संसार में बहुम कम देशों में देखने को मिलता।

जीवित रहने के लिए प्रत्येक मनुष्य की कुछ आधारभूत आवश्यकताएं होती हैं। आराम और विलासिता की वस्तुओं को अगर निकाल दिया जाए, तो भी जीवन का एक न्यूनतम स्तर बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति को उचित भोजन, पर्याप्त वस्त्र तथा अच्छा मकान मिल सके, और इनकी मात्रा इतनी हो कि स्वयं व्यक्ति की तथा उसके आश्रितों की इन वस्तुओं की आवश्यकताएं पूरी हो सकें। जब इन आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं हो पाती, और व्यक्ति तथा उनके आश्रितों का जीवन–स्तर उस न्यूनतम स्तर से भी नीचे गिर जाता है, तो उस अवस्था को निर्धनता कहते हैं।

श्री गोडार्ड महोदय के अनुसार ''निर्धनता उन वस्तुओं का अभाव या अपर्याप्त पूर्ति है, जो कि एक व्यक्ति तथा उसके आश्रितों को स्वस्थ एवं बलवान बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं।''1

जॉन एल0 गिलिन के अनुसार ''निर्धनता वह स्थिति है, जिसमें व्यक्ति अपर्याप्त आय अथवा मूर्खतापूर्ण व्ययों के कारण अपनी शारीरिक एवं मानिसक दक्षता को प्राप्त करने तथा अपने एवं अपने ऊपर आश्रित व्यक्तियों का समाज, जिसका वह सदस्य है, मानकों के अनुसार कार्य करने योग्य बनाने हेतु आवश्यक जीवन–स्तर को स्थिर नहीं रख सकता।''2

''धनी एवं निर्धन, समाज में सदा रहे हैं, परन्तु ऐतिहासिक रूप में निर्धनता ने इस समय तब तक महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या का रूप धारण नहीं किया, जब तक विनिमय–प्रणाली एवं मूल्यों के स्तर की स्थापना नहीं हुई। जब व्यापार का विस्तार हुआ, तो कुछ लोगों ने धन संचय करना आरम्भ कर दिया, जिससे असमान वितरण का जन्म हुआ। वे ऐश्वर्य भोगने लगे, जबकि दूसरे लोगों को सुविधाएं तक भी प्राप्त नहीं थीं। समाज के सदस्यों ने आर्थिक प्रस्थिति में अंतरों की तुलना करना आरम्भ कर दिया तथा स्वयं को समाज के प्रचलित जीवन–स्तरों के अनुसार धनी अथवा निर्धन समझने लगे। अतएव निर्धनता उसी समय समस्या का रूप धारण करती है, जब समाज के सदस्यों के बीच आर्थिक प्रस्थिति में स्पष्ट अन्तरों की स्थापना की जाती है, एवं इन अन्तरों की तुलना और उनका मूल्यांकन किया जाता है। इन अंतरों की अनुपस्थिति में निर्धनता अवस्थित नहीं होती, चाहे लोग अपना जीवनयापन अत्यंत कठिनता से करते हों।

इस प्रकार निर्धनता की कोई समस्या मध्य युग में नहीं थी, यद्यपि आधुनिक मानकों के अनुसार उस समय का जीवन–स्तर पर्याप्त मात्रा में निम्न था।''3 ''निर्धनता अमीरी का सापेक्ष है। जब लोग अपने जीवन स्तर की दूसरे लोगों के जवीन–स्तर से तुलना करके रोष का अनुभव करते हैं, उसी समय निर्धनता उन्हें पीड़ा पहुंचाती है। अति दरिद्रता की स्थिति में भी वे अपने भाग्य की दूसरों के भाग्य से तुलना किये बिना इस पीडा का अनुभव कर सकते हैं। वे, जो उनके पास है, उससे अधिक प्राप्त करने में विफल रहते हैं तथा इस विफलता की अनभिज्ञता उनमें रोष उत्पन्न कर देती है। अतएव रोष की मनोवृत्ति निर्धनता की समस्या को अग्र पंक्ति में ला देती है। आदिम लोग अधिक संकटमय जीवन व्यतीत करते थे, परन्तु वे अपनी असुविधा को प्राकृतिक स्थिति समझते थे, न कि सामाजिक, जिसका समाधान अपेक्षित था। अतः उन्होंने इसे बिना किसी रोष की भावना के स्वीकार किया। लोग निर्धन हैं, इसलिए नहीं कि उनके

कष्टों में वृद्धि हुई है, अपितु रोष की इस भावना के कारण, कि जो दूसरों के पास है, वह उनके पास नहीं है। जब वे स्वयं को उन वस्तुओं से वंचित महसूस करते हैं, जो दूसरों के पास है, तो वे स्वयं को निर्धन समझते हैं। केवल तभी निर्धनता एक सामाजिक समस्या का रूप धारण करती है।''4

''निर्धनता अंकन के स्तर सभी स्थानों पर एकरूप नहीं हैं। एडम स्मिथ के अनुसार ''मनुष्य धनी अथवा निर्धन उस मात्रा में होता है, जिसमें वह जीवन की आवश्यकताओं, सुविधाओं एवं मनोरंजनों को प्राप्त कर सकता है।'' पश्चिमी समाजों के लोग इसलिए निर्धन नहीं हैं कि उनको जीवन की आवश्यक वस्तुएं, यथा– रोटी, कपड़ा और मकान उपलबध नहीं हैं, अपितु इसलिए निर्धन हैं, क्योंकि उनके पास जो वस्तुएं हैं, वे प्रचलित मानकों के अनुसार अपर्याप्त समझी जाती हैं। इस प्रकार रेडियो या मोटर कार आदि को लेने की असमर्थता निर्धनता का सूचक मानी जाती है। भारत में दूसरी ओर जवीन की आवश्यक वस्तुओं के वंचन को निर्धनता समझा जाता है। रेडियो अथवा कार अमीरी का चिह्न है। भारत की अधिकांश जनसंख्या निर्वाह–स्तर से नीचे गुजारा करती है। अनेक लोगों को दो समय पर्याप्त भोजन भी नहीं मिलता। वे अपनी रातें फुटपाथों पर व्यतीत करते हैं और अधनंगे रहते हैं।''5 भारत में निर्धनता सर्वप्रमुख सामाजिक समस्या है। सुविधाओं की बात तो दूर रही, लोगों के जवीन की आवश्यकताओं की भी संतुष्टि नहीं होती। दूसरे देशों की तुलना में प्रति व्यक्ति आय अत्यधिक कम है। भारतीय नागरिक की तुलना में अमेरिकन की औसत आय तैंतीस गुना अधिक है। वास्तव में हम कितने निर्धन हैं। कुछ समूहों में व क्षेत्रों में निर्धनता एवं समूहों की अपेक्षा अधिक गम्भीर है। देहाती कृषक परिवार, नगरीय परिवारों की तुलना में अधिक निर्धन हैं। अनुसूचित जातियों तथा श्रमिक वर्ग के लागों की आय बहुत कम है।

''श्रीमती वीरा एन्स्टे ने अपनी पुस्तक 'भारत में आर्थिक विकास' में लिखा है– ''भारत एक धनी देश है, जहां के निवासी निर्धन हैं।'' यह भी कहा जाता है कि ''इसकी मिट्टी धनी है, किन्तु निवासी निर्धन हैं।'' इस प्रकार के विरोधाभासी कथन भारत की उस स्थिति की ओर संकेत करते हैं, जिसमें प्रचुर प्राकृतिक साधन होने के बावजूद भी उनका विदोहन न होने के कारण भारतवासियों को दरिद्रता का जवीन व्यतीत करना पड़ रहा है।''6

संयुक्त परिवार प्रणाली निर्धनता के लिए काफी कुछ उत्तरदायी है। यह प्रणाली बहुत से लोगों को आलसी, निकम्मा और गैर जिम्मेदार बना देती है। यह बाल–विवाह को प्रोत्साहित

करती है, जिससे जनसंख्या तेजी से बढ़ती है, और साथ ही देश में निर्धनता की वृद्धि होती है। भारतीय जाति–प्रथा देश की आर्थिक प्रगति के मार्ग में बहुत बड़ी बाधा है। जाति–प्रथा के कारण लोग श्रम की गरिमा को नहीं समझ पाते। उच्च जाति के लोग उन कार्यों को नहीं करना चाहते, जिन्हें वे निम्न जातियों का समझते हैं। इससे भी देश में निर्धनता बढ़ी है। भारतवासियों को अनेक भंयकर रोग सदा घेरे रहते हैं। इस प्रकार निम्न स्वास्थ्य–स्तर के कारण देश में लोग कम आयु में मर जाते हैं। अतः योग्य और अनुभवी व्यक्तियों की कमी के कारण आर्थिक उन्नति उचित रूप से नहीं हो पाती है। अशिक्षा, गन्दी बस्तियां, खेती की पिछडी दशा, बुनियादी उद्योगों की पिछड़ी दशा गरीबी में अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। यहां के निवासियों की आय इतनी कम होती है कि सभी रुपया खाने–पहनने में ही व्यय हो जाता है। जो रूपया बचता है, उसे छुपाकर रख दिया जाता है या आभूषण बनवा लिये जाते हैं। अतः उद्योग धन्धों को पनपने के लिए आवश्यक पूंजी उपलब्ध नहीं पाती है, और देश में निर्धनता का विकास होता है। परिवहन एवं संचार के उन्नत साधनों की कमी के कारण गांववासियों को उपज का उचित मूल्य न मिलने से निर्धनता पनपती है। भारत में निर्धनता का एक कारण यह भी है कि यहां के श्रमिकों की कार्यक्षमता कम है, जबकि अन्य प्रगतिशील देशों में श्रमिक प्रायः तीन गुना अधिक काम करते हैं। कार्यक्षमता की कमी का प्रभाव राष्ट्रीय आय पर पड़ता है, और निर्धनता से देश का पीछा नहीं छूटता। भारत में बैंकिंग और साख–सुविधाएं समुचित मात्रा में उपलब्ध न होने से देश में पूंजी का संचय और निर्माण उचित ढंग से नहीं हो पाता और देश में गरीबी पनपती है। भारतवासी प्राकृतिक संसाधनों को उचित ढंग से उपयोग न करने के कारण भी निर्धन बने हुए हैं। राजनीतिक तथा भौगोलिक कारणों से भी देश में बेरोजगारी और निर्धनता बढ़ी है।

हेनरी जार्ज के अनुसार निर्धनता का प्रुमख कारण भूमि का वैयक्तिक स्वामित्व एवं उस पर व्यक्ति का एकाधिकार है। उसने लिखा है– ''विशाल नगरों में, जहां भूमि का मूल्य इतना अधिक है कि इसे फुटों से मापा जाता है, निर्धनता एवं ऐश्वर्य की अति पाई जाती है। सामाजिक स्तर की इन दोनों अतियों के बीच जीवनदशा की असमानता भूमि के मूल्य से मापी जा सकती है।''7 मार्क्स के अनुसार, निर्धनता का प्रुमख कारण पूंजीपतियों द्वारा श्रमिकों का शोषण है। माल्यस के अनुसार बढ़ती हुई जनसंख्या निर्धनता का कारण है। कृषि के साधन परम्परागत हैं, जिनसे उत्पादन कम मात्रा में होता है तथा जनसंख्या के विशाल भाग का कृषि पर आधारित होना, कृषि के साधनों का परम्परागत होना, धन व साधनों का असमान वितरण, दोषपूर्ण आर्थिक नियोजन आदि देश की उन्नति में बाधा डालते हैं, जिसके परिणामस्वरूप निर्धनता फलती–फूलती

है, तथा बाल–अपराध, अपराध, आत्महत्या, विवाह–विच्छेद, बेकारी, अपर्याप्त पोषण, भिक्षावृत्ति, वेश्यावृत्ति जैसी विकराल समस्याओं के रूप में इसके दुष्परिणाम देखने को मिलते हैं। यद्यपि भारत सरकार अनेक साधनों द्वारा निर्धनता को दूर करने का प्रयत्न कर रही है। इसलिए हम आशा करते हैं कि एक दिन ऐसा आएगा, जब सभी लोगों को जीवन की मूल आवश्यकताएं सुलभ हो जायेंगी।

सन्दर्भ सूची

1. डा0 रवीन्द्रनाथ मुखर्जी तथा देवाशीष दूबे– व्यवहारिक समाजशास्त्र, सरल प्रकाशन–1997, पृ0–144–145
2. गिलिन एवं गिलिन– कल्चरल सोशियोलॉजी, पेज–758
3. विद्याभूषण, डी0आर0 सचदेव– समाजशास्त्र के सिद्धान्त, किताब महल–1992, पृ0–796
4. उपरोक्त पृ0–797
5. उपरोक्त पृ0–797
6. प्रो0 एम0एल0 गुप्ता एवं डॉ0 डी0डी0 शर्मा– प्रतियोगिता साहित्य सीरीज, साहित्य भवन–2009, पृ0–75
7. गोडार्ड हेनरी जी0– प्रोग्रेस एण्ड पॉवर्टी, पृ0–5।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-03, March- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2024/04

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

सुकन्या कुमारी एवं डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह

For publication of research paper title

"भारत में ग्रामीण निर्धनता–एक सामाजिक समस्या"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-03, Month March, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com